1-7-2001

सिर्फ प्रीत करने वाले नहीं लेकिन निभाने वाले बनो

आप सभी ने जो अपने दिल से बाबा के सन्देश का रेसपान्ड प्रतिज्ञा में दिया था, तो उन प्रतिज्ञाओं का रेसपान्ड लेकर मैं बाबा के पास गई। लेकिन वतन की हर रोज़ नई-नई बातें होती हैं। बाबा और वतन तो वही होता है

लेकिन दृश्य भिन्न-भिन्न होते हैं। तो आज बाबा ने अमृतवेले हम सभी टीचर्स को एक्सकरशन (सैर) करने के लिए बुलाया था। और जब मैं बाबा के पास गई तो सदा की भांति बाबा ने मुस्कराते हुए मिलन मनाया और कहा कि आज प्रतिज्ञाओं का समाचार लाई हो! ऐसे कहते बाबा ने बहुत प्यार से बोला कि बच्ची बापदादा ने देखा कि मधुबन की वरदानी धरनी का और आपसी मिलन का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा है। सबने प्रतिज्ञायें तो अच्छी की हैं। बापदादा रिज़ल्ट को देख करके खुश हैं। अब इस किये हुए संकल्प को अपने आपसे रिवाइज करते रहना। मर्ज नहीं कर देना। रोज़ अमृतवेले इस की हुई प्रतिज्ञा को स्मृति में लाना कि मैंने बापदादा से क्या-क्या वायदा किया और कहाँ तक प्रैक्टिकल कर रहे हैं। अगर कोई भी बात सामने आये तो उसको बाप के सामने रख एक्स्ट्रा शक्ति ले निभाते रहना। आप एक कदम दिलाराम बाप के आगे दिल का समाचार सच्ची दिल से, निश्चय से रखना तो बापदादा पद्मगुणा सहयोग देने के लिए बंधे हुए हैं। कोई साथी या वायुमण्डल व अपने ही व्यर्थ मन के भाव हिलाने आयें तो आप दिल से बाप को याद करेंगी तो सदा बापदादा का साथ, हाथ और शक्तियों का अनुभव करेंगी। बस यही दृढ़ संकल्प करो कि कुछ भी हो, लेकिन मुझे परमात्म प्रीत की रीति निभानी ही है। स्व परिवर्तन द्वारा स्वयं तो क्या लेकिन अन्य साथियों के भी सहयोगी बनना ही है। दिल को सदा क्लीन और क्लीयर रखना है तो प्रीत करने वाले नहीं लेकिन निभाने वाले बन उड़ते रहेंगे।

बोलो, बाप के समान निमित्त बनी हुई टीचर्स साथी, ऐसा ही है ना! फिर उसके बाद बाबा ने सब टीचर्स को इमर्ज किया, आगे दादियां थी और पीछे हम सब ऐसे अर्ध चन्द्रमा के रूप में खड़े थे, तो बाबा ने कहा आओ बच्चे, आओ बच्चे, ऐसे कहते बाबा इतना बड़ा-बड़ा हो गया, बाबा की बांहें इतनी बड़ी-बड़ी हो गई जो सब बाबा की बाहों में समा गये। बाबा ने एक-एक को बहुत प्यार से दृष्टि दी, कुछ समय सभी एकदम लवलीन थे।

फिर बाबा बोले, बच्ची आज बापदादा बच्चों को एक सौगात देते हैं।

सौगात तो बहुत विचित्र थी। वह क्या थी - वह चिन्दी के समान बड़ा तिलक था, जिसमे लिखा था - ‘‘सफलता का सितारा’’, जो बापदादा ने अपने हस्तों से हर एक टीचर के मस्तक पर लगाया। ऐसे लगा जैसे आज वतन में सब एक्सकरशन मना रहे हैं। बहुत अच्छी रिमझिम थी, सब एक दूसरे से मिल रहे थे। ऐसे ही मिलन मनाकर आप सभी भी हमारे साथ अव्यक्त वतन से साकार वतन में पहुँच गये।